विवाह की उत्पत्ति
(Origin of marriage)

परिवार और विवाह दोनों एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। एक दूसरे का अंग है और एक के बिना दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं रह सकता है। इसलिये जब और जिस तरह परिवार की उत्पत्ति हुई होगी, उसी प्रकार उसी समय विवाह की भी परम्परा चली होगी। विवाह और परिवार की अलग-अलग उत्पत्ति और विकाश नहीं हुए।

श्री मॉर्गन (Morgan) आदि कुछ विद्वानो का मत है कि मानव-समाज व सस्कृति के प्रारम्भिक काल मे विवाह नामक किसी भी सस्था का अस्तित्व न था, यह तो सामाजिक विकास के कुछ स्तरो के बाद उत्पन्न हुई है। श्री मॉर्गन ने यह सिद्धान्त प्रचलित किया कि प्रारम्भ मे समाज मे कामाचार (promiscuity) की दशा पायी जाती थी और इसीलिये यौन-सम्बन्ध स्थापित करने की पूर्ण स्वतत्रता थी। परन्तु जनजातीय ससार से एकत्रित आधुनिकतम प्रमाणो से इस सिद्धान्त की पुष्टि नही होती है। त्योहारो मे यौन-सम्बन्ध स्थापित करने की स्वतत्रता या धर्म पालन के हेतु पत्नी की भेंट यौन-साम्यवाद या कामाचार का प्रमाण नही हो सकती। यहाँ तक कि ब्रेज़ील की काइगन, साइबेरिया की चकची तथा आस्ट्रेलिया की डेयरी जनजातियो जिनमे कि समूह-विवाह की प्रथा पायी जाती है, वहाँ भी इस बात का कोई प्रमाण नही मिला है कि उन समाजो मे कभी कामाचार की दशा थी। अति प्राचीन जनजाति जैसे कादर, पलियन, चेंचू, विर-होर (सब भारतवर्ष के) मे तथा अण्डमान प्रायद्वीप की जनजातियो मे भी कामाचार